अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल, मुंबई.

परीक्षा सत्र : नवम्बर-दिसम्बर 2022

परीक्षा का नाम : अलंकार पूर्ण (प्रथम प्रश्नपत्र)

विषय : गायन तथा स्वरवाद्य वादन

दि. 20/11/2022 समय : सुबह 9 से 12 कुल अंक : 100

सूचनाएँ : (1) प्रश्न क्र. 1 अनिवार्य है ।
(2) अन्य छः प्रश्नों मे से चार प्रश्न हल किजिए ।
(3) सभी प्रश्नों के अंक समान है ।

प्रश्न 1. निम्नलिखित रागोमेंसे किसी एक रागका पूर्ण शास्त्रीय परिचय दीजिए। इनमेंसे एक रागमें बडा ख्याल / मसीतखानी गत तीन आलाप और दो तानोंके साथ स्वरलिपीबध्द करें। (7+8+3+2=20)

1) नटभैरव 2) देसी

प्रश्न 2. अ) राग मियाँमल्हार अथवा राग श्री का छोटा ख्याल अथवा रजाखानी गत पं.भातखंडे पध्दतिमें स्वरताललिपीबध्द कीजिये। उसके 5 ताने लिखिए। (10)

ब) पाठ्यक्रममेंसे किसी एक रागमें धमार स्थायी की तिगुनसहित लिपीबध्द करे। (5+5=10)

प्रश्न 3. निम्नलिखित रागजोडियोंका साम्य-भेद सोदाहरण स्पष्ट करे। (कोई भी दो) (20)

1) पूर्वी-पुरियाधनाश्री
2) बिलासखानी तोडी-कोमल ऋषभ आसावरी
3) दरबारी कानडा-नायकी कानडा

प्रश्न 4. नवरागनिर्मितीके तत्त्वोंपर चर्चा करते हुए मिश्र, जोड और संकीर्ण रागोंकी परिभाषा लिखिए। अपने पाठ्यक्रमके कौनकौनसे राग मिश्र, जोड और संकीर्ण इन प्रकारोंमें आते है उनके नाम लिखिए। (8+8+4=20)

प्रश्न 5. रागांग वर्गीकरणका अर्थ स्पष्ट करे तथा 'तोडी' (8+6+6=20)
और 'आसावरी' रागांगके दो-दो रागोंकी उस रागके रागांग और अन्य विशेषताओंको लेकर विवेचन करे।

प्रश्न 6. टिप्पणियाँ लिखिए। (कोई 4) (5+5+5+5=20)

1) अध्वदर्शक स्वर का महत्व
2) गायकके गुणदोष
3) परमेलप्रवेशक राग
4) होरी गीतप्रकार
5) संधीप्रकाश राग

प्रश्न 7. अ) जोडियाँ लगाइये। (10)

अ	ब
1) धृपद	1) राग के नामसे रचित अर्थपूर्ण काव्यरचना
2) धमार	2) चार अंगसे एकत्रित बनाया हुआ गीतप्रकार
3) ख्याल	3) पं.जयदेव
4) ठुमरी	4) उपशास्त्रीय गीतप्रकार
5) टप्पा	5) तनन, देरेना इस अर्थहीन शब्दोंकी रचना
6) तराणा	6) पंजाबका लोकप्रिय गीतप्रकार
7) चतरंग	7) नबाब वाजिदअली शाह
8) दादरा	8) सुलतान हु शर्की
9) अष्टपदी	9) हवेली संगीत
10) रागसागर	10) चौताल / राजा मानसिंह तोमर

[redacted] ब) सही या गलत बताईये । (10)

1) पाश्चात्य स्वरलेखनमें जो 5 रेखाएँ खीची जाती है उसे स्टेव्ह अथवा स्टाफ (Staff) कहते है।

2) वैदिक कालमें वेदोंके स्वर दिखानेके लिये 'न्यूमस पध्दती' प्रचारमें थी।

3) कानडा अंगका प्रमुख राग मालकंस होता है।

4) अहीर भैरव रागमें रे कोमल और नी कोमल स्वर लगते है।

5) जिस रागपर दुसरे रागकी छाया आती है उस रागको 'छायालग' राग कहते है।

6) 'कुआड' लयकारी याने चारमें सात (4 मे 7)

7) वल्लभ संप्रदायकी मंदिरमें आजभी पूजाविधी धृपद एवं धमार गायनकी सहायतासेही संपन्न होती है।

8) ताल दीपचंदी केवळ विलंबित ख्यालके लिये उपयुक्त होता है।

9) काफी थोटोत्पन्न राग भिमपलासमें ग और ध स्वर कोमल लगते है।

10) धृपद गायकीके संगतमें मृदंग का उपयोग किया जाता है।